एमएन राय

मनवेंद्र नाथ राय का जन्म 6 फरवरी 18 सो 86 को बंगाल के 24 परगना जिले में हुआ था। एमएन राय ने अपने जीवन के प्रारंभिक चरण में क्रांतिकारी गतिविधियों में संलिप्त थे। उन्होंने हावड़ा षड्यंत्र केस में एवं कानपुर षड्यंत्र केस में गिरफ्तार भी हुए आरंभिक रूप में वे युगांतर एवं अनुशीलन समिति जैसे संगठनों से जुड़े हुए थे।

- एमएन राय के वैचारिक जीवन को तीन चरणों में बांटा जा सकता है।
- जीवन के प्रथम चरण में वे एक क्रांतिकारी राष्ट्रवादी थे।
- द्वितीय चरण में वे एक कट्टर मार्क्सवादी बन गए।
- और तृतीय चरण में हुए मार्क्सवाद का त्याग करना मानव वादी होकर उभरे।
- एमएन राय एक विशुद्ध भौतिकवादी विचारक थे उन्होंने भारतीयों के आध्यात्मिक श्रेष्ठता के सिद्धांत को नकार दिया और उन्होंने इसे पोंगा पंथ और पिछड़ापन करार दिया।

- वे गांधी तथा नेहरू के कठोर आलोचक थे।

- एमएन राय ने रिवॉल्यूशन एंड काउंटर रिवॉल्यूशन इन चाइना(दिसंबर 1973 में) लिखी तथा द फिलॉस्फी कंसीक्वेंसेस ऑफ मॉडर्न साइंस (1932 -36) नामक पांडुलिपि भी लिखें।

- एमएन रॉय के अनुसार भारतीय बुर्जुआ ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ सांठगांठ स्थापित कर ली है इसलिए भारत में साम्राज्यवाद के विरुद्ध केवल सर्वहारा की क्रांति ही विकल्प है

- उन्होंने अपनी रचना द फ्यूचर ऑफ इंडियन पॉलिटिक्स (1920) में कहा कि भारत में सर्वहारा किसानों को सम्मिलित करके क्रांति की जाएगी।

- एमएन राय ने भारतीय इतिहास का वर्गीय विश्लेषण करते हुए कहा है कि भारत में सामंतवादी अर्थव्यवस्था का धीरे-धीरे विनाश हो रहा है।

- एमएन राय ने अपनी रचना इंडिया इज ट्रांजिशन 1922 में भारतीय समाज एवं इतिहास कावड़िए विश्लेषण प्रस्तुत किया।

- भारत में पूंजीवाद का विकास हो रहा है।

- राय के अनुसार ब्रिटिश शासन द्वारा प्रत्येक संवैधानिक सुधार बुर्जुआ वर्ग को खुश करने के लिए है जिससे भारत में शोषण बरकरार रखा जाएगा।

- उन्होंने भारत मे साम्यवादी क्रन्ति का बड़ा उद्देश्य बताते हुए कहा कि भारत की क्रांति पूरी दुनिया में साम्यवादी क्रांति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

Scanned with CamScanner

एम एन राय के विचारों में परिवर्तन

- राय अपनी युवा अवस्था मे क्रांतिकारी विचारधारा जे समर्थक थे। उन्होंने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया । राय ने वर्ष 1915-16 में सशस्त्र क्रांति के द्वारा भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त कराने हेतु योजना तैयारकी , जो सफल नहीं हो सकी।
- वर्ष 1918 के बाद उन्होंने समाजवाद का अध्ययन किया तथा अपना नाम मानवेन्द्र नाथ भट्टाचार्य से मानवेन्द्र नाथ राय कर लिया।। 1920 में स्वयं को समाजवादी घोषित किया।
- वर्ष 1929 में कुछ समाजवादी सिद्धांतों के विरोध के कारण उन्हें वर्ष 1929 में हुए कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से निष्कासित कर दिया गया।
- वर्ष 1930 में कानपुर षड्यंत्र के तहत उन्हें 6 वर्ष की सजा हुई जहां जेल में उन्होंने कई महत्वपूर्ण दार्शनिक की रचनाएं लिखी तथा जेल से निकलने के बाद उन्होंने समाजवाद को पूर्णता त्याग दीया और क्रांतिकारी मानवतावादी बन गए।

कांग्रेस के प्रति दृष्टिकोण

- **उन्होंने कांग्रेस को एक बुर्जुआ संगठन माना भारत में साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में कांग्रेस का सहयोग करने से इंकार कर दिया।**
- **कांग्रेस से सहयोग के मुद्दे पर उनमें और लेलिन में मतभेद थे क्योंकि लेलिन के अनुसार साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में बुर्जुआ वर्ग को साथ लिया जा सकता है।**

Scanned with CamScanner